● **सुनो, समझो और सुनाओ :**

३. काकी

– सियारामशरण गुप्त

जन्म : १८९५ चिरगाँव(उ.प्र.) **मृत्यु :** १९६३, **रचनाएँ :** मौर्य-विजय, बापू, अमृत पुत्र **(काव्यकृतियाँ)** गोद, अंतिम आकांक्षा, नारी **(उपन्यास)**, मानुषी **(कहानी संग्रह) परिचय :** आपका वैयक्तिक तथा साहित्यिक रूप गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित रहा है ।

प्रस्तुत मनोवैज्ञानिक कहानी में कथाकार ने अबोध बालक के जीवन की करुण घटना एवं बालसुलभ कल्पना को साकार किया है ।

विचार मंथन

।। स्वामी तिन्हीं जगाचा, आईविना भिकारी ।।

विचार मंथन की कृति करवाने के लिए आवश्यक सोपान :

* विद्यार्थियों से 'माँ' के बारे में चर्चा कराएँ ।
* किसी दिन माँ के घर में न होने पर उनके अनुभव कहलवाएँ ।
* माँ की महानता से संबंधित सुवचन बताने के लिए कहें ।

5U36VU

उस दिन बड़े सबेरे जब श्यामू की नींद खुली तब उसने देखा, घरभर में कुहराम मचा हुआ है । उसकी काकी उमा नीचे से ऊपर तक एक कपड़ा ओढ़े हुए कंबल पर भूमि शयन कर रही है और घर के सब लोग उसे घेरकर बड़े करुण स्वर में विलाप कर रहे हैं ।

लोग जब उमा को श्मशान ले जाने के लिए उठाने लगे, तब श्यामू ने बड़ा उपद्रव मचाया । लोगों के हाथों से छूटकर वह माँ के ऊपर जा गिरा । बोला, ''काकी सो रही है । इसे इस तरह उठाकर कहाँ लिए जा रहे हो ? मैं इसे न ले जाने दूँगा ।'' वह अपनी माँ को काकी कहा करता था । लोगों ने बड़ी कठिनाई से उसे हटाया । काकी के अग्नि संस्कार में भी वह न जा सका । एक दासी राम-राम करके उसे घर पर ही सँभाले रही ।

यद्‌यपि बुद्‌धिमान गुरुजनों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गई है परंतु असत्य के वातावरण में सत्य बहुत समय तक छिपा न रह सका । आसपास के अबोध बालकों के मुँह से ही वह प्रकट हो गया । यह बात उससे छिपी न रह सकी कि काकी और कहीं नहीं ऊपर राम के यहाँ गई है । काकी के लिए कई दिन लगातार रोते-रोते उसका रुदन तो

❑ किसी एक परिच्छेद का उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन करें । आदर्श मुखर वाचन कराएँ । कहानी का मौन वाचन कराके उसके आशय पर चर्चा करें । माँ, चाची, दादी और नानी के लिए वे क्या-क्या करते हैं, उनसे कहलवाएँ ।

वाचन जगत से

प्रेमचंद द्‌वारा लिखित 'बूढ़ी काकी' पढ़ो तथा उसका सारांश सुनाओ ।

धीरे-धीरे शांत हो गया परंतु शोक शांत न हो सका । वर्षा के अनंतर एक, दो दिन में ही पृथ्वी के ऊपर का पानी अगोचर हो जाता है; परंतु भीतर उसकी आर्द्रता जैसे बहुत दिन तक बनी रहती है, वैसे ही उसके अंतस्तल में शोक जाकर बस गया था । वह प्रायः अकेला बैठा-बैठा शून्य मन से आकाश की ओर ताका करता ।

एक दिन उसने ऊपर एक पतंग उड़ती देखी । न जाने क्या सोचकर उसका हृदय एकदम खिल उठा । पिता के पास जाकर बोला, ''काका, मुझे एक पतंग मँगा दो । अभी मँगा दो ।''

पत्नी की मृत्यु के बाद से विश्वेश्वर बहुत अनमने से रहते थे । ''अच्छा, मँगा दूँगा,'' कहकर वे उदास भाव से और कहीं चले गए ।

श्यामू पतंग के लिए बहुत उत्कंठित था । वह अपनी इच्छा किसी तरह न रोक सका । एक जगह खूँटी पर विश्वेश्वर का कोट टँगा था । श्यामू ने इधर-इधर देखकर उसके पास एक स्टूल सरकाकर रखा और ऊपर चढ़कर कोट की जेबें टटोलीं, एक चवन्नी पाकर वह तुरंत वहाँ से भाग गया ।

सुखिया का लड़का भोला, श्यामू का समवयस्क साथी था । श्यामू ने उसे चवन्नी देकर कहा, ''अपनी जीजी से कहकर चुपचाप एक पतंग और डोर मँगा दो । देखो, खूब अकेले में लाना, कोई जान न पाए ।''

पतंग आई । एक अँधेरे घर में उसमें डोर बाँधी जाने लगी । श्यामू ने धीरे से कहा, ''भोला, किसी से न कहो तो एक बात कहूँ ।''

भोला ने सिर हिलाकर कहा, ''नहीं, किसी से न कहूँगा ।''

श्यामू ने रहस्य खोला, कहा- ''मैं यह पतंग ऊपर राम के यहाँ भेजूँगा । उसको पकड़कर काकी नीचे उतरेगी । मैं लिखना नहीं जानता, नहीं तो इसपर उसका नाम लिख देता ।''

भोला श्यामू से अधिक समझदार था । उसने कहा, ''बात तो तुमने बड़ी अच्छी सोची परंतु एक कठिनाई है । यह डोर पतली है । इसे पकड़कर काकी उतर नहीं सकती । इसके टूट जाने का डर है । पतंग में मोटी रस्सी हो तो सब ठीक हो जाए ।''

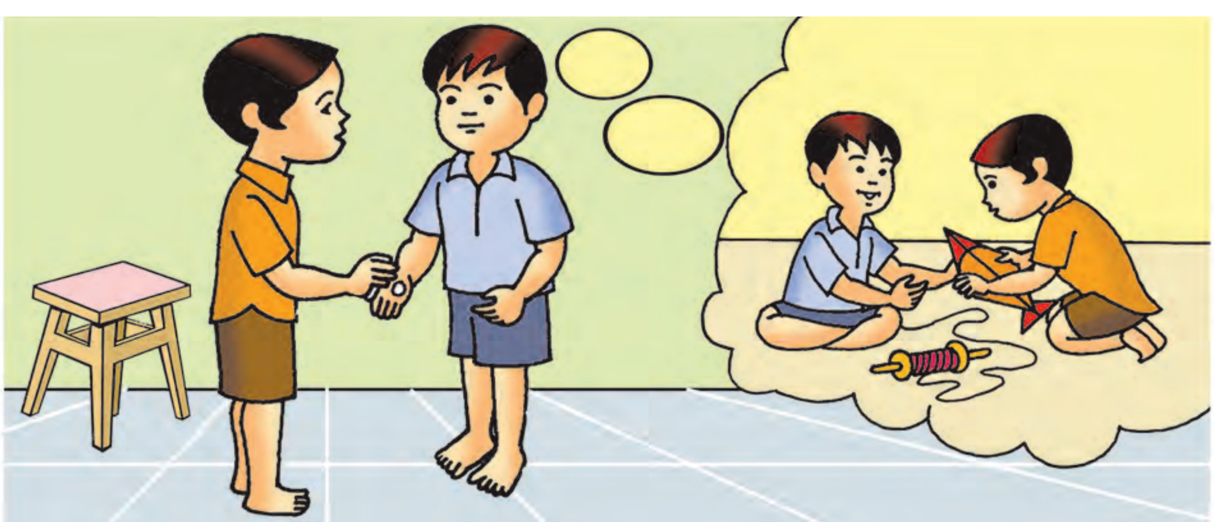

❑ विशेष वर्णों का उच्चारण करवाएँ और उनके उच्चारण पर ध्यान दें । कहानी में से मात्रावाले शब्द खोजवाकर लिखवाएँ और उनमें से कुछ शब्दों का वाक्य में प्रयोग करवाएँ । यह कहानी उन्हें अपने शब्दों में कहने के लिए प्रेरित करें ।

स्वयं अध्ययन

‘पतंगोत्सव’ संबंधी जानकारी प्राप्त करो और बताओ :

- कब
- कारण
- पतंगों के प्रकार
- व्यंजन

श्यामू गंभीर हो गया । मतलब यह बात लाख रुपये की सुझाई गई, परंतु कठिनाई यह थी कि मोटी रस्सी कैसे मँगाई जाए । पास में दाम नहीं और घर के जो आदमी उसकी काकी को बिना दया-माया के जला आए हैं, वे उसे इस काम के लिए कुछ देंगे नहीं । उस दिन श्यामू को चिंता के मारे बड़ी रात तक नींद नहीं आई ।

पहले दिन की ही तरकीब से दूसरे दिन फिर उसने पिता के कोट से एक रुपया निकाला । उसे ले जाकर भोला को दिया और बोला, ‘‘देख भोला, किसी को मालूम न होने पाए । अच्छी-अच्छी दो रस्सियाँ मँगा दे । एक रस्सी छोटी पड़ेगी । जवाहिर भैया से मैं एक कागज पर ‘काकी’ लिखवा लूँगा । नाम लिखा रहेगा तो पतंग ठीक उन्हीं के पास पहुँच जाएगी ।’’

दो घंटे बाद प्रफुल्ल मन से श्यामू और भोला अँधेरी कोठरी में बैठे हुए पतंग में रस्सी बाँध रहे थे । अकस्मात उग्र रूप धारण किए विश्वेश्वर शुभ कार्य में विघ्न की तरह वहाँ आ घुसे । दोनों को धमकाकर वे बोले, ‘‘तुमने हमारे कोट से रुपया निकाला है?’’

भोला सकपकाकर एक ही डाँट में मुखबिर हो गया । वह बोला, ‘‘श्यामू भैया ने रस्सी और पतंग मँगाने के लिए निकाला था ।’’

विश्वेश्वर ने श्यामू को दो तमाचे जड़कर कहा, ‘‘चोरी सीखकर जेल जाएगा ? अच्छा, तुझे आज अच्छी तरह समझाता हूँ ।’’ कहकर फिर कई तमाचे जड़े और कान मलने के बाद पतंग फाड़ डाली । अब रस्सियों की ओर देखकर उन्होंने पूछा, ‘‘ये किसने मँगाई?’’

भोला ने कहा, ‘‘इन्होंने मँगाई थी । ये कहते थे, इससे पतंग तानकर काकी को राम के यहाँ से नीचे उतारेंगे ।’’

विश्वेश्वर हतबुद्धि होकर वहीं खड़े रह गए । उन्होंने फटी हुई पतंग उठाकर देखी । उसपर चिपके हुए कागज पर लिखा था ... ‘काकी’ ।

❑ कागज पर ‘काकी’ लिखा देखकर विश्वेश्वर के मन में कौन-कौन-से भाव/विचार आए होंगे, विद्यार्थियों को बताने के लिए कहें । कहानी के अंतिम प्रसंग का कक्षा में विविध गुट बनाकर नाट्यीकरण कराएँ । अन्य कहानी कहलवाएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

कुहराम = कोलाहल
प्रफुल्ल = प्रसन्न
विलाप = रोना
अकस्मात = एकाएक
अगोचर = अदृश्य
सकपकाकर = डरकर
मुखबिर = खबर देने वाला जासूस

मुहावरा

हतबुद्‌धि होना = कुछ समझ में न आना

जरा सोचो ..... चर्चा करो

यदि सच में पतंग 'काकी' तक पहुँच गई होती तो ...

सुनो तो जरा

भ्रमणध्वनि के नंबर डायल करने के बाद व्यस्त होने पर सुनाई देने वाली उद्‌घोषणाएँ सुनो और सुनाओ ।

खोजबीन

भारत में मनाए जाने वाले किन्हीं दो त्योहारों की जानकारी प्राप्त करो और निम्न मुद्‌दों के आधार पर लिखो :

- राज्य
- कब और विधि
- वैज्ञानिक कारण
- अन्य राज्यों से तुलना

मेरी कलम से

किसी पसंदीदा विषय पर आकर्षक विज्ञापन बनाओ :

- सामग्री
- विषय
- संदेश

अध्ययन कौशल

'डेंगू, मलेरिया' संबंधी टेलीफिल्म देखो और इनसे बचने के लिए आवश्यक सावधानियाँ लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

माँ वात्सल्य का सागर होती है ।

✲ **कहानी के इन पात्रों का आपस में रिश्ता लिखो :**

रिश्ता

- जवाहर और श्यामू ....
- विश्वेश्वर और उमा ....
- सुखिया और भोला ....
- श्यामू और उमा ....
- श्यामू और भोला ....
- विश्वेश्वर और श्यामू ....

भाषा की ओर

नीचे दिए वाक्य पढ़ो और प्रत्येक वाक्य से ऐसे दो शब्द ढूँढ़कर लिखो; जो एक-दूसरे के विरुद्धार्थी हैं । कॉपी में इसी प्रकार के अन्य वाक्य बनाओ :

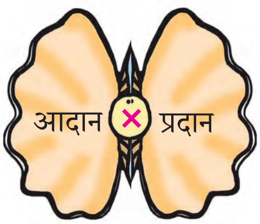

१. भाषा विचारों के आदान-प्रदान का प्रभावी साधन है ।

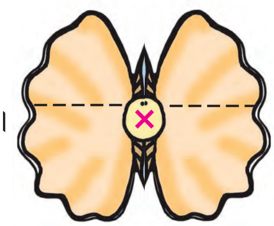

२. हमेशा सज्जनों की संगति में रहें और दुर्जनों से दूर ।

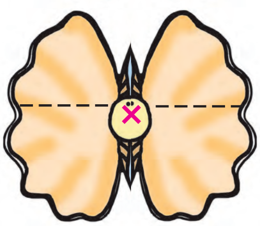

३. विज्ञान का सही उपयोग वरदान है अन्यथा वह अभिशाप है ।

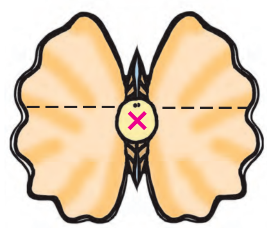

४. आज विश्व को अशांति की नहीं शांति की आवश्यकता है ।

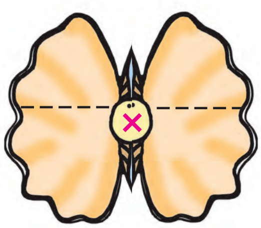

५.बगीचे में चारों तरफ फूलों की इतनी सुगंध है कि वहाँ दुर्गंध का नामोनिशान नहीं ।

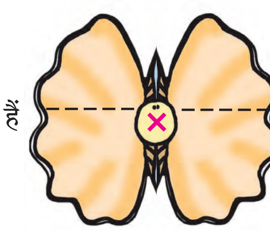

६. निरर्थक शब्द विचारों को स्पष्ट नहीं करते, सार्थक शब्द ही करते हैं

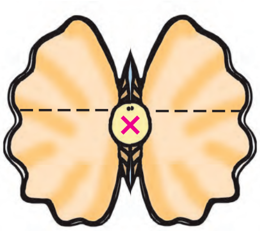

७. यदि प्रशंसा नहीं कर सकते हैं तो कम-से-कम निंदा तो न करें ।

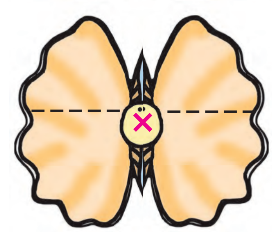

८. गाँव जाना अभी तो अनिश्चित है; निश्चित हो जाने पर बताएँगे ।

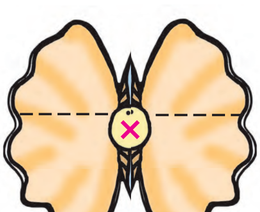

९. अच्छे संस्कार बच्चों को अवनति से बचाकर उन्नति की ओर ले जाते हैं ।

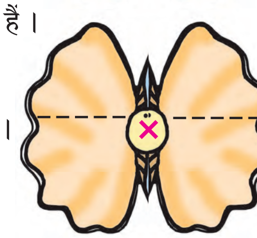

१०. उचित और अनुचित का चुनाव स्वयं को ही करना चाहिए ।